## इस माला में अब तक प्रकाशित हिन्दी पुस्तिकाएँ

**लक्ष्मीनाथ बेज़बरुआ** : हेम बरुआ / **बंकिमचन्द्र चटर्जी** : सुबोधचन्द्र सेनगुप्त / **बुद्धदेव बसु** : अलोकरंजन दासगुप्त / **चण्डीदास** : सुकुमार सेन / **ईश्वरचन्द्र विद्यासागर** : हिरण्मय बनर्जी/**जीवनानन्द दास** : चिदानन्द दासगुप्त/**काज़ी नज़रुल इस्लाम** : गोपाल हाल्दार / **महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर** : नारायण चौधुरी / **माणिक बन्द्योपाध्याय** : सरोजमोहन मित्र/**प्रमथ चौधुरी** : अरुणकुमार मुखोपाध्याय /**राजा राममोहन राय** : सौम्येन्द्रनाथ टैगोर / **ताराशंकर बन्द्योपाध्याय** : महाश्वेता देवी / **सरोजिनी नायडू** : पद्मिनी सेनगुप्त / **तरुदत्त** : पद्मिनी सेनगुप्त / **गोवर्धनराम** : रमणलाल जोशी / **मेघाणी** : वसन्तराव जटाशंकर त्रिवेदी / **नानालाल** : उमेदभाई मणियार / **नर्मदाशंकर** : गुलाबदास ब्रोकर / **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** : मदन गोपाल / **बिहारी** : बच्चन सिंह / **देवकीनन्दन खत्री** : मधुरेश / **जयशंकर प्रसाद** : रमेशचन्द्र शाह / **महावीरप्रसाद द्विवेदी** : नन्दकिशोर नवल / **जायसी** : परमानन्द श्रीवास्तव/ **प्रेमचन्द** : प्रकाशचन्द्र गुप्त /**राहुल सांकृत्यायन** : प्रभाकर माचवे/**रैदास** : धर्मपाल मैनी / **श्यामसुन्दरदास** : सुधाकर पाण्डेय / **सुभद्रा कुमारी चौहान** : सुधा चौहान / **बी० एम० श्रीकंठय्य** : ए० एन० मूर्तिराव / **बसवेश्वर** : एच० थिप्पेरुद्रस्वामी/ **विद्यापति** : रमानाथ झा/**ए० आर० राजराज वर्मा** : के० एम० जॉर्ज/ **चन्दु मेनन** : टी० सी० शंकर मेनन / **कुमारन् आशान** : के० एम० जॉर्ज / **महाकवि उल्लूर** : सुकुमार अषिकोड / **वल्लत्तोल** : बी० हृदयकुमारी / **दत्तकवि** : अनुराधा पोतदार/ **ज्ञानदेव** : पुरुषोत्तम यशवन्त देशपाण्डे / **हरि नारायण आपटे** : रामचन्द्र भिकाजी जोशी / **केशवसुत** : प्रभाकर माचवे / **नामदेव** : माधव गोपाल देशमुख / **नरसिंह चिन्तामण केलकर** : रामचन्द्र माधव गोले / **श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर** : मनोहर लक्ष्मण वराडपांडे / **फकीरमोहन सेनापति** : मायाधर मानसिंह / **राधानाथ राय** : गोपीनाथ महन्ती/**सरलादास** : कृष्णचन्द्र पाणिग्राही/**भाई वीर सिंह** : हरबंस सिंह/ **जाम्भोजी** : हीरालाल माहेश्वरी / **मुहतां नैणसी** : बृजमोहन जावलिया / **सूर्यमल्ल मिश्रण** : विष्णुदत्त शर्मा/**बाणभट्ट** : के० कृष्णमूर्ति/**भवभूति** : गो० के० भट/**जयदेव** : सुनीतिकुमार चटर्जी / **कल्हण** : सोमनाथ धर / **माघ कवि** : चण्डिकाप्रसाद शुक्ल/ **सचल सरमस्त** : कल्याण बू० आडवाणी / **शाह लतीफ़** : कल्याण बू० आडवाणी/ **भारती** : प्रेमा नन्दकुमार/**इलंगो अडिगल** : मु०वरदराजन/**कम्बन** : एस०महाराजन/ **माणिक्कवाचकर** : जो० वंमीकनाथन / **पोतन्ना** : दिवाकर्ल वेंकटावधानी / **वेदम वेंकटराय शास्त्री** : वेदम वेंकटराय शास्त्री (कनिष्ठ) / **गुरजाड** : नार्ल वेंकटेश्वर राव/**वीरेशलिंगम्** : नार्ल वेंकटेश्वर राव / **वेमना** : नार्ल वेंकटेश्वर राव / **ग़ालिब** : मु० मुजीब ।

साहित्य

# नर्मदाशंकर

## गुलाबदास ब्रोकर

**भारतीय साहित्य के निर्माता**

नर्मदाशंकर

भारतीय साहित्य के निर्माता

# नर्मदाशंकर

लेखक
**गुलाबदास ब्रोकर**

अनुवादक
आलोक मेहता

साहित्य अकादेमी

*NarmadaShankar :* Hindi translation by Alok Mehta of Gulabdas Broker's English monograph. Sahitya Akademi, New Delhi, Second Edition (1982)

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15-00

© साहित्य अकादेमी

प्रथम संस्करण : १९७९
द्वितीय संस्करण : १९८२

साहित्य अकादेमी

**प्रधान कार्यालय :**
रवीन्द्र भवन, ३५, फ़ीरोज़शाह रोड, नई दिल्ली-११०००१

**क्षेत्रीय कार्यालय :**
ब्लाक V-बी, रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम, कलकत्ता-७०००२९

२९, एल्डाम्स रोड (द्वितीय मंज़िल), तेनामपेट, मद्रास-६०००१८

१७२, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई-४०००१४

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15-00

मुद्रक :
भारती प्रिण्टर्स,
दिल्ली-११००३२

मादाम सोफिया वाडिया को
जिन्होंने इस महान् व्यक्ति के
अध्ययन के लिए प्रेरित किया

# १

भारत में ब्रिटिश राज के पूरी तरह जम जाने से पहले उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में लोग जिन स्थितियों में रह रहे थे, वे दुःखद ही नहीं दिल दहला देने वाली भी थी। उस समय घोर अज्ञान छाया हुआ था और शिक्षा का प्रभाव बहुत कम था। लोगों का दृष्टिकोण सामन्ती और मध्ययुगीन था। सामाजिक जीवन निम्नतम स्तर पर पहुँच गया था। स्त्रियों को दूसरे दर्जे का नागरिक समझा जाता था और वे कठिन परिश्रम, खटने और घुटन वाली ज़िन्दगी जीती थीं। सब तरफ गन्दगी और बीमारियों का जोर था। अंधविश्वासों ने सब को गुलाम बना रखा था। कहीं भी उदार दृष्टिकोण और जागरूक अभिव्यक्ति नहीं दिखती थी।

उन दिनों में सूरत गुजरात का एक महत्वपूर्ण शहर था। लेकिन उसके बावजूद वहाँ भी समान परिस्थितियाँ थीं। शहर में रात को अँधेरा होने के बाद किसी के लिए भी घर से बाहर निकल पाना कठिन होता था। यदि किसी को जाना भी होता, तो उसे अपने साथ जलता हुआ दीपक साथ रखना पड़ता। संयोग-वश यदि दीपक बुझ जाता, जिसकी पूरी सम्भावना रहती थी, क्योंकि उसके लिए चारों ओर से चल रही तेज़ हवाओं से छिपाने का कोई साधन रहता नहीं था, तब घर से बाहर निकलने वाले व्यक्ति पर गहरा आतंक छा जाता क्योंकि तब उसके लिए हर पेड़ राक्षस और हर सड़क भूत-प्रेत होती। १९६८ में गुजराती का पहला उपन्यास 'कारन घेलो' के रचयिता महान लेखक नन्दशंकर मेहता की जीवनी लिखने वाले उनके पुत्र और बीसवीं शताब्दी के आई० सी० एस० अफ़सर विनायक नन्दशंकर मेहता ने अपनी पुस्तक 'नन्दशंकर जीवन चित्र' में उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान सूरत की परिस्थितियों का विस्तृत चित्रण किया है। पुस्तक के पृष्ठ २८-२९ पर उन्होंने कहा है—

"रात अँधेरी और उचाट है। आकाश में चारों ओर गहरे काले मानसूनी बादल छाए हुए हैं, जो तारों की झिलमिल रोशनी में भी रुकावट डाल रहे हैं। देश में नगरपालिकाओं की स्थापना अब तक नहीं हुई है, इसलिए प्रमुख सड़कों पर भी प्रकाश का चिह्न तक नहीं है। सड़कें असामान्य और गड्ढों से घिरी हुई हैं। ऐसी ही एक सड़क पर एक किशोर बालक हाथ में लालटेन लिये तेज़ी से जा रहा है। वातावरण में राक्षसों और भूत-प्रेतों का आतंक बराबर बना हुआ है। यों तो ऐसा लग रहा है जैसे उसमें कुछ साहस है, लेकिन उसके दिल की धड़कनें तेज़ी से चल रही हैं। लम्बे डग न भर पाने के कारण जल्दी-से-जल्दी पहुँच जाने की उसकी इच्छा पूरी नहीं हो पा रही है। इसी समय, ऐसा लगा जैसे उसके पीछे

से किसी की आवाज़ आई। 'कृपया एक क्षण के लिए रुको।' यह कोई महिला लग रही है। लड़का चौंक जाता है। उसकी हिम्मत छूटती दिखती है। "हे भगवान, यह किसी ऐसी औरत का प्रेत होगा जो बच्चे को जन्म देते समय मर गई होगी।" उसके पैर लड़खड़ाने लगते हैं। बहुत कोशिश करके वह अपने को सम्भाल पाता है और तेज़ी से गायत्री मंत्र का जाप करने लगता है, वह आवाज़ वाली दिशा में बढ़ता है वहाँ एक इमारत के बाहरी हिस्से में एक औरत बुझा हुआ दीपक लिये खड़ी है। वह अनुरोध करती है—"मेरे दीपक की रोशनी चली गई है। कृपा करके अपने लालटेन की ज्योति से इसे फिर से जला दो।" वह अपनी साड़ी का पल्ला भी दीपक के पास कर लेती है, ताकि हवा से वह फिर न बुझ पाए। लड़का अपनी लालटेन के ढक्कन को हटाता है और उसके दीपक को जलाने लगता है। लेकिन तभी, हवा का एक तेज़ झोंका आता है और दोनों दीपक बुझ जाते हैं। लड़के ने किसी तरह उस समय तक हिम्मत की थी, लेकिन अब वह भयभीत होकर जान बचाने के लिए भाग पड़ता है।"

लोग केवल इसी तरह के अंधविश्वासों में ही नहीं रहते थे। जब पहली बार रेलगाड़ी आई, तो लोगों ने सोचा कि वह एक विशाल दैत्य है और लोहे की जंजीरों में जकड़कर ले जाएगा। जब नर्मदा पर पुल बनाया गया, तो लोगों ने सोचा कि नास्तिक ब्रिटिश सरकार नदियों की महान देवी नर्मदा की पवित्रता को नष्ट करने की कोशिश कर रही है। वे उस समय प्रसन्न हुए जब पुल के उद्घाटन के समय रेल का इंजिन तकनीकी कारण से बीच में जाकर रुक गया। वे एक साथ चिल्लाए—"ठीक है, अब देवी ने अपना रोष प्रकट किया है।" लेकिन जब इंजिन पुनः आगे बढ़ने लगा, तो वे स्तब्ध रह गए। तुरन्त एक विपरीत प्रतिक्रिया हुई। उन्होंने सोचा—'यहाँ यह दैत्य नहीं है, बल्कि कोई दैवी शक्ति है। आओ चलें और इसकी पूजा करें।' वे सचमुच गए और माला पहनाकर उस पर कुमकुम लगाया। (मेरी कारपेन्टर : सिक्स मन्थ्स इन इंडिया (१६६८) पृष्ठ २७-२८)।

ऐसे अंधविश्वास वाले जीवन में लोगों के अज्ञान का लाभ उठाने की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलना आश्चर्य की बात नहीं हो सकती। इस सम्बन्ध में धार्मिक गुरु और पुजारियों से बढ़कर योग्य कौन हो सकता था, जो अपने को भगवान श्रीकृष्ण का असली अवतार बताते थे? उनमें से कुछ ऐसे विशेषाधिकारों का उपयोग करते थे, जो काम भ्रष्टतम व्यक्ति भी करने से हिचकिचा सकते थे। वे चारित्र्य का पाठ पढ़ाते थे, लेकिन स्वयं चरित्रहीन जीवन बिताकर दावा करते थे कि उन्हें शास्त्रों में वह सब करने की स्वीकृति मिली हुई है। उनके अनुयायी प्रसन्नता से उनकी सारी माँगें पूरी करते थे और कट्टरपंथी स्त्रियाँ भी जो उनकी माँग के सामने झुकती थीं, इसे आशीर्वाद समझती थीं। इस विशेषाधिकार प्राप्त उच्च



वर्ग को चुनौती देना कठिन था, जो समाज सुधार की कोई भी बात सामने आने पर अपना मुँह मोड़ लेते थे। उन्होंने लड़कियों के लिए शिक्षा की बात नहीं सुनी और जब नए वातावरण के प्रभाव में किसी ने ऐसी बात सोचने की हिम्मत भी की, तो उन्होंने घोषित किया कि जो लड़की लिखना-पढ़ना सीखेगी, वह अपने जीवन में विधवा हो जाएगी। समाज में वैधत्व से बढ़कर कोई अभिशाप नहीं हो सकता था। लोग अपनी बहन-बेटियों के विधवा होने की कल्पना से ही घबरा गए और उन्होंने महिलाओं के जीवन में शिक्षा की बात भी सुननी नहीं चाही।

जातीयता का प्रभाव सर्वोपरि था। जीवन में इसका गहरा प्रभाव होता था। जिन्होंने इस व्यवस्था को भंग करने की रंच मात्र भी कोशिश की, उन्हें गम्भीर परिणाम भुगतने पड़े। जिन्होंने इस व्यवस्था के प्रति उदासीनता दिखाई, उन्हें समाज में पुनः जगह पाने के लिए अनुष्ठान और प्रायश्चित करने पड़ते थे, जो निम्नतम स्तर का अपमान जैसा होता था।

शिक्षा लगभग स्थिर हो गई थी। बहुत थोड़े स्कूल थे और जहाँ प्राथमिक विषयों को प्राथमिक ढँग से पढ़ाया जाता था। नई व्यवस्था में वह परिचय मात्र होता था। जो शिक्षक सार्वजनिक रूप से यह पढ़ाते थे कि पृथ्वी गोल है, अपने शिष्यों को व्यक्तिगत रूप से समझाते थे कि यह सब झूठ है और परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए है। वे कहते—"यदि पृथ्वी सचमुच गोल होती और घूमती रहती तो हमारे सब मकान हिलकर गिर गए होते।" (महीपात्रम : दयाराम चित्र पृष्ठ ८)।

जो व्याकरण पढ़ाया जाता था, वह समान रूप से प्राथमिक ढँग का होता था और भाषा अथवा साहित्य में समुचित शिक्षा का अभाव ही था। जहाँ तक गुजराती का सवाल है, गद्य का नामोनिशान नहीं था, जबकि मध्ययुग के दौरान गुजराती भाषा कविता के क्षेत्र में काफी आगे बढ़ गई थी। कोई गुजराती भाषा या साहित्य के अध्ययन की सोचता ही नहीं था, क्योंकि समाज के बुद्धिजीवियों ने भाषा के सम्बन्ध में कुछ सोचा ही नहीं। बृजभाषा, संस्कृत अथवा पारसी का अध्ययन ही उनके लिए सब कुछ था।

इससे अधिक भी बहुत कुछ कहा जा सकता है, लेकिन कुल मिलाकर संक्षिप्त में ब्रिटिश राज की स्थापना से पहले १९वीं शताब्दी में यह परिस्थिति भारत में, विशेष रूप से गुजरात में बनी हुई थी। शताब्दी का तिहाई हिस्सा पूरा होने के बाद अँग्रेज़ी के नए विचारों, जीवनयापन के नए रास्तों और आदर्शों से तथा उन विचारों को अपनाने वाले कुछ नए लोगों के सामाजिक जीवन में प्रभावशाली होने से उन परिस्थितियों में धीरे-धीरे परिवर्तन आ रहा था। परिवर्तन के पक्ष-धरों में एक प्रमुख नाम था—दुर्गाराम मेहताजी (१८०९-१८७८) एक छोटे से शिक्षक लेकिन महान व्यक्ति और दूसरे एक कवि पुरुष दलपतराम ढायाभाई